

संरक्षण का समय

रक्षाबन्धन

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

सिद्धयोग पथ पर, इस पूरे माह के दौरान हम निष्ठापूर्वक उन अभ्यासों को करते आ रहे हैं जिन्हें श्रीगुरुमाई ने हमें केन्द्रण के रूप में प्रदान किया है और ये अभ्यास हैं, ध्यान और मन्त्र-जप। हम विशेष रूप से अगस्त माह में मनाए जाने वाले पर्वों के सन्दर्भ में इन अभ्यासों को करते आ रहे हैं—पहला पर्व था, भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि, फिर बाबा मुक्तानन्द की दिव्य दीक्षा और अब, रक्षाबन्धन।

रक्षाबन्धन, 'राखी पूर्णिमा' [श्रावण पूर्णिमा] पर मनाया जाता है, जो इस वर्ष २७ अगस्त [भारत में २८ अगस्त] को है। जैसाकि मैंने इस माह पहले भी लिखा था, रक्षाबन्धन एक ऐसा पर्व है जो भारत की सांस्कृतिक व शास्त्रीय परम्पराओं से गहराई से जुड़ा है और इस विषय में देवी-देवताओं के, राजा-रानियों के और अन्य लोगों व समुदायों के विभिन्न विवरण हैं जहाँ उन्होंने एक-दूसरे को धागों से बनी राखियाँ बाँधीं। आधुनिक समय में, भारत में, बहनों द्वारा अपने भाइयों की कलाई पर राखियाँ बाँधना एक लोकप्रिय प्रथा है।

अतः, सदियों से राखी एक शक्तिशाली प्रतीक रही है जो लोगों के आपसी सम्मान और एक-दूसरे की रक्षा करने की उनकी वचनबद्धता को प्रकट करती है। सिद्धयोग पथ पर, राखी विशेष रूप से एक गहन प्रतीक है, क्योंकि यह गुरु और शिष्य के बीच के प्रेम व संरक्षण के सम्बन्ध को दर्शाती है। अब, हम विशेषतः किसकी रक्षा करने की कामना कर रहे हैं, यह विचार करने और स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने योग्य बात है। यह वह ज्योत है जिसे श्रीगुरु ने हमारे अन्तर में जाग्रत किया है, हमारे अन्दर विद्यमान दिव्यता का बोध, जिसे हम दूसरों में व अपने आस-पास के समस्त संसार में भी प्रतिबिम्बित होता हुआ देख सकते हैं। यह हमारे हृदय में विद्यमान प्रेम के साथ जुड़ाव की वह गहरी भावना है जिसे हम अपनी सिद्धयोग साधना द्वारा और अधिक दृढ़ करते हैं।

'संरक्षण' के लिए अंग्रेज़ी भाषा का शब्द है 'प्रोटेक्शन' [protection] जो प्राचीन फ़्रेन्च भाषा [फ़्रान्स की भाषा] के शब्द 'प्रोटेक्शियौ' [proteccion] [जिसका अर्थ है, 'संरक्षण, कवच'] से आया है। और प्राचीन फ़्रेन्च भाषा का यह शब्द 'प्रोटेक्शियौ' [proteccion], उत्तरकालीन लैटिन भाषा के शब्द

‘प्रोटेक्शनम’ [protectionem] से बना है जिसका अर्थ है ‘आच्छादन या सुरक्षा प्रदान करने वाला आवरण’। मुझे यह एक ज्ञानवर्धक दृष्टिकोण लगता है जिसके माध्यम से हम ध्यान के अपने अभ्यास व उसके परिणामों को देख सकते हैं। यह मेरा अपना अनुभव रहा है कि हर बार जब हम सिद्धयोग ध्यान का अभ्यास करते हैं, हम अपने आत्मबोध को, अपनी अन्तर-ज्योत को प्रखर कर रहे होते हैं। एक तरह से, हम उस बोध की सुरक्षा कर रहे होते हैं—हम उसका संरक्षण कर रहे होते हैं और धीरे-धीरे उसे ऐसा बना रहे होते हैं कि ऐसी कोई भी आन्तरिक व बाहरी ताक़त उसे भेद न सके जिसके कारण हम अपने उस बोध को भूल जाएँ। संसार-सागर की लहरें हमें आघात पहुँचाने का ख़तरा पैदा कर सकती हैं, परन्तु हम दृढ़तापूर्वक उसमें अवस्थित रहते हैं जो हम वास्तव में हैं, जो श्रीगुरु ने हमें प्रदान किया है।

यह मुझे पुनः राखी पर वापस ले आता है, यानी उस साधारण-से प्रतीत होने वाले धागे पर। चूँकि विस्मृति यानी भूलना एक वास्तविक संकट है जिससे हमें अपना बचाव करना चाहिए, इसलिए एक ऐसी चीज़ का होना उपयोगी व आश्चस्त करने वाला हो सकता है जो भौतिक व ठोस हो और जो हमें संरक्षण का स्मरण कराती रहे। वस्तुतः, भारत में ऐसे रक्षासूत्रों का एक समृद्ध इतिहास है। कुछ धार्मिक अनुष्ठानों में पुरोहित या घर के बड़े-बुजुर्ग, भक्तों को बुरी या अनिष्टकारी शक्तियों से बचाने के लिए उनकी कलाई पर पीले व लाल रंग के धागों को आपस में गुँथकर बनी ‘मौली’ या ‘कलावा’ बाँधते हैं। उसी प्रकार, बच्चों की कलाईयों पर अकसर काला धागा बाँधा जाता है; यह भी एक प्रकार का रक्षा करने वाला तावीज़ होता है और बुरी नज़र से बचाता है।

सिद्धयोग पथ पर, गुरुमाई जी ने ‘स्मरणिकाओं’ की बात की है जो स्मरण करने में मदद करती हैं। श्रीगुरु के साथ अपने सम्बन्ध की अभिस्वीकृति के रूप में, उसके लिए कृतज्ञता अभिव्यक्त करने के लिए हम जो राखी बाँधते हैं, वह ऐसी ही एक ‘स्मरणिका’ हो सकती है। सिद्धयोग पथ की एक और आवश्यक स्मरणिका है, जपमाला जिसका उपयोग हम मन्त्र-जप करने के लिए करते हैं। जपमाला का एक-एक मनका फेरते हुए, हम मन-ही-मन मन्त्र-जप करते रहते हैं और बारम्बार इस बात की पुष्टि करते रहते हैं कि परमात्मा हमारे हृदय में विद्यमान हैं। ऐसी भौतिक वस्तु को धारण करना अत्यन्त शक्तिपूर्ण होता है—यह जपमाला, मनकों से बना कंगन या ब्रेसलेट और यहाँ तक कि अँगूठी भी हो सकती है। यह हमें जप के अभ्यास का स्मरण निरन्तर कराती रहती है और यह भी याद दिलाती है कि जप करने से हमें क्या मिलता है और हम किसका संरक्षण करते हैं।

यह उस संरक्षण की भी स्मरणिका है जिसे हम दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं। मेरा यह अनुभव रहा है है कि जब हम मन्त्र-जप व ध्यान के अभ्यास करते हैं तो जिस संरक्षण का हम आवाहन करते हैं, वह केवल हम तक ही सीमित नहीं रहता। यह संरक्षण सब ओर प्रसरित होता है और उन सबको अपनी छत्रछाया में ले लेता है जिससे भी हम मिलते हैं या जो भी चीज़ हमारे सम्पर्क में आती है।



© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।